जल संरक्षण

डॉ. देवीदीन अविनाशी
हमीरपुर, उत्तर प्रदेश–210502

जल संरक्षण

जल संरक्षित करे सभी जन, एक बूँद ना हो बेकार ।
उसके बिन जीवन ना सम्भव, जीव जन्तु भी हो लाचार।।
वर्षा का जल संचित करले, दूषित होने ना पाये।
तभी रहेंगे स्वास्थ्य धरा पर, जाने माने और जनागें।।
चारो ओर मचा कुहराम, दिखने लगे अशुभ आसार

जल संरक्षण 1

सदियों से ही रही महत्ता, भूल गये तनु सुख पाकर।
नदियॉ, झील, तालाब सूख गये, करे प्रयोग न सँभल–सँभल कर।।
ऐसा माहौल पनप गया कैसे, पाये कोई मलहार।

जल संरक्षण 2

दूषित पर्यावरण हो रहा, कोई चिन्तन करे नहीं।
चिन्ता करते दुखः न जाये, करे कर्म बिपरीत यही।।
यह भी जान रहे होते हैं, मचा हुआ है हाहाकार।

जल संरक्षण 3

दिन–दिन बढ़ती जाये समस्या, ध्यान नही कुछ जन देते।
हो भविष्य में अति विकराल, समय से युक्ति करें चेते।।
तभी परेशानी कम होये, झूँठ करे ना जय जयकार।

जल संरक्षण 4

कुछ मानव अति दोषी होते, मन ही मन में बने वर दानी।
जीव जन्तु पौधो के संग संग, सबको होये है रानी।।
चने संग ज्यों घुन पिस जाये, दुखो का हो ना पारावार।

जल संरक्षण 5

सब मिल कर सत युक्ति करें अब, किसी भी जाति धर्म के हों।
तास से कोई बच ना पायें, क्या देश के या पर देश के हों।।
अविनाशी गर चैन चाहते, स्वार्थ रहित कर लें उपचार।

जल संरक्षण 6

विविध

विविध प्रदूषण बढ़ते जाये, जहाँ में सब चिल्लाय रहे।
कस हटि है कुछ जान रहे पर, उल्टी विधि अपनाय रहे।।
जल ही जीवन कहते जाते, अंधाधुन्ध उपयोग करें।
दूषित करते, कचरा डाले, अंधविश्वासी प्रयोग करें।।
जय गंगा माँ बोल बोल कर, खुश हो होकर जाय रहे।

विविध – 1

वायु, जल जहरीले हुये, जिससे तन में रोग बढ़े।
काटे वृक्ष फूल पत्ती को, जल में फेंक किस्मत को गढ़े।।
कुछ ढ़ोगी अस जाल बिछाये, खुद रोये भय खाय रहें।

विविध – 2

स्वच्छ जलाशय दिखें कही ना, गन्दे नाले नदियों से जुड़े।
रंच स्वयं ना अमल करें , औरो को सिखायें खड़े–खड़े।।
अभियानों के दिन भी आयें, जाने और जनाय रहें।

विविध – 3

सभी जगह चर्चायें में होयें जल अशुद्धि के हानि की।
कोई सीख नही माने बस, बाते हों बेइमानी की।।
ऐसी स्थिति होय नही कहें, सभी लोग अकुलाम रहें।

विविध – 4

तन में जल का अधिक हो प्रतिशत, स्वच्छ हमेशा करे प्रयोग।
बिल्कुल ही बरबाद करें ना, सीमित करें सभी उपयोग।।
दवा सदृश हो सदा शुद्ध जल, जो जाने अपनाय रहे।

विविध – 5

वर्षा का जल संचय करलें , तन तन ना बरबाद करें।
मरने से जीवो को बचायें, जन–जन को आबाद करें।।
अविनाशी आनन्द मिलेगा, कर देखें बतलाय रहें।

विविध – 6

जल तन

जल, तन संग परिवेश स्वच्छ हो, कई रोग खुद दूर रहें।
पर्यावरण का हो संरक्षण, हरियाली भर पूर रहे।।
मर्यादा भी बनी रहे संग, बढ़ा प्रदूषण घट जाये।
बना लेय घर–घर शौचालय, खुले में शौच नहीं जाये।।
आज समय आ गया है ऐसा, पर पे ना मजबूर रहें।
जल तन – 1

द्वेष बैर आपस में करें ना, सब मानवता अपनाये।
आपा तजे प्रेम से रह लें, सीखे सबको सिखलाये।।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, भृम वादो से दूर रहें।
जल तन – 2

भोजन करने से पहले नित कर साबुन से धुलें धुलायें।
करें कभी ना आलस कोई, ये पल फेर कभी ना आये।।
शिक्षित होने का लाभ तभी, जब अन्धविश्वासों से दूर रहें।
जल तन – 3

स्वास्थ्य निहित होये तनम न तब, बचत काल धन की होये।
खुद संग देश जहॉ का हित हो, समय अमूल नहीं खोऐ।।
जाने माने और जनायें, जीवन का दस्तूर रहे।
जल तन – 4

जो भी पैदा हुये जहॉ में, पर हित हित निःस्वार्थ करें।
प्रकृति संतुलन रखने के हित, वृक्ष लगा कर बड़े करे।।
जीवनदाई वायु सभी को, फल छाया भरपूर रहे।
जल तन – 5

विविध प्रदूषण के परिणाम, व्रासित करते चारो ओर।
बढ़ रहा ताप ग्लेशियर पिघलें, होगी प्रलय मिले ना मोर।।
अविनाशी असर से बचे नही, चाहे सीधा या शूर रहे।
जल तन – 6

स्वच्छ

स्वच्छ जल उपयोग करें, जीवन सॅवर जाये।
जानते होते हुये कुछ, कहर ही ढ़ाये।।
प्यास से जो मर रहा होता अगर कोई।
मीठा खारा वो न देखें, कैसा भी होई।।
आस जीने की सजों कहे, जान बच जाये।
स्वच्छ – 1

रंच भर बरबाद होना, जान खुद लेवे।
एक दिन एहसास होगा, प्राण ना देवे।।
जन्म जिसका हो जहॉ, उद्धार हो जाये।
स्वच्छ – 2

जल ही जीवन कहते रहते, भूल कुछ जाते।
दूषित करें कचरा भी डालें, भय नहीं खाते।।
कुरीति अंध विश्वास से, धोने गंगा में जाये।
स्वच्छ – 3

हो जरूरत जितने की बस उतना ही लेंवे।
एकत्र करें वर्षा का जल, भन्डार कर देंवे।।
गाढ़े समय में काम दे, हो त्रास कम जाये।
स्वच्छ – 4

उपभोग जो दूषित करें, बीमार नित रहतें।
काल धन की हानि हो, संग क्लेश ही रहते।।
जानते जो हैं नही, उनको भी बतलायें।
स्वच्छ – 5

ज्ञानियो का धर्म है, उपकार कर लेंवे।
ध्यान रखें मानवता सत्, आपाको तज देवें।।
अविनाशी खुद जाने रहस्य, जैसा करें पायें।
स्वच्छ – 6

मैं दावे के साथ कहता हूँ कि हिंदी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता।

–बंकिम चन्द्र